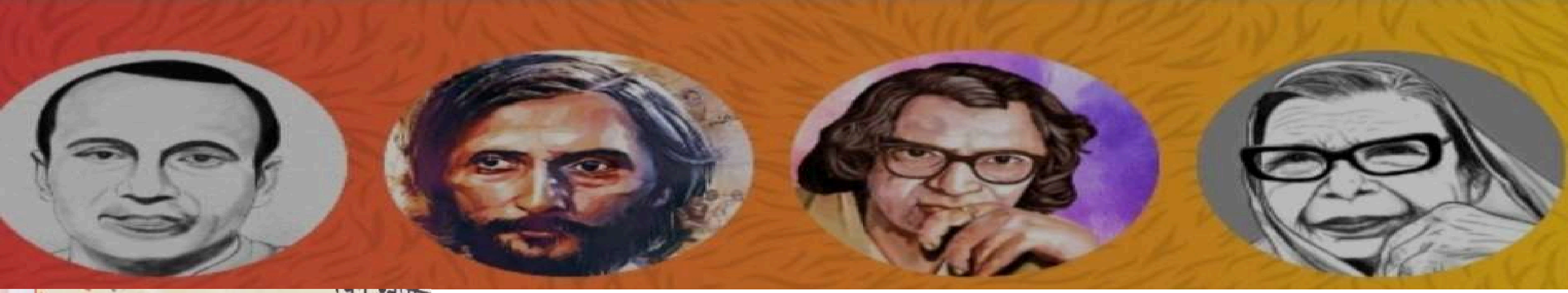

छायावाद का सामान्य परिचय

डॉ. प्रमोद कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह
(झारखण्ड)

साहित्य
https://sahity.in
छायावादी युग

छायावाद (1918-1936 ई. तक)

- छायावाद का अर्थ :
- परिभाषा :
- नामकरण :
- विकास :

छायावाद के प्रमुख कवि एवं रचनाएं :

चार स्तम्भ कवि :

1. जयशंकर प्रसाद (1889-1937 ई.)

- **रचनाएं :** झरना, आंसू, लहर, कामायनी, उर्वशी आदि।

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1897-1961 ई.)

- **रचनाएं :** अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, नये पत्ते, सरोजस्मृति आदि।

3. सुमित्रानंदन पंत (1900-1977 ई.)

- **रचनाएं** :उच्छवास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन आदि।

4. महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.)

- **रचनाएं** : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा आदि।

छायावाद के अन्य कवि :

- डॉ. रामकुमार वर्मा (1905-1990 ई.)
- उदयशंकर भट्ट (1898-1966 ई.)
- लक्ष्मीनारायण मिश्र (1903-1987 ई.)
- गोपाल सिंह नेपाली आदि

छायावाद की प्रमुख प्रवृतियां/विशेषताएं :

- व्यक्तिवाद की प्रधानता
- प्रकृति चित्रण
- श्रृंगार-निरूपण
- नारी भावना
- रहस्य और जिज्ञासा की भावना
- दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति
- राष्ट्र प्रेम की भावना
- कल्पना की प्रधानता
- सौंदर्य निरूपण
- मानवीकरण आदि

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहना उचित होगा कि छायावाद हिंदी काव्य का गौरवपूर्ण काव्यधारा है। इस युग में प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी चार स्तम्भ कवियों ने अपनी विशिष्ट काव्य शैलियों से जीवन के सूक्ष्मतम, मानवीय एवं उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा की। साथ ही पूर्व युग की इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध सरस-मधुर, मुक्तक एवं प्रबंध -काव्यों से हिंदी साहित्य का प्रणयन किया।

धन्यवाद